तित्थयर

जैन भवन

6165

श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमन्दिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
कोबा (गांधीनगर) पि ३८२००९

वर्ष : २४ अंक : ८
नवम्बर २०००

ज्ञानी होने का सार यह है कि वह किसी भी प्राणी की हिंसा न करे।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Groundnut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax : 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Cal-700 007
Ph: 2384329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Calcutta - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २४ | अंक - ८, नवम्बर | २०००

॥ जैन भवन ॥

संपादन

लता बोथरा

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : **Tithayar,** P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें -
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three year : Rs. 160.00, US $ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007 Phone: 238 2655 and Printed by her
at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Calcutta-700 006 Phone: 241 1006

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेख		लेखक	पृ. सं
१.	प्रजातन्त्र - महावीर	-	लता बोथरा	३३९
२.	कर्म की कहानी	-	श्री सुयश मुनिजी	३४६
३.	भगवान महावीर	-	उपाध्याय अमरमुनिजी	३४८
४.	तीर्थंकर महावीर का निर्वाण पर्व दीपावली एक समीक्षा	-	श्री गणेश प्रसाद जैन	३५०
५.	मलयासुन्दरी चरित्र			३५६

आवरण चित्र–**श्री अष्टापद (कैलाश)**

Composed by :

Anupriya Printers, 6A, Baroda Thakur Lane, Calcutta-700 007, Ph. 232 6083

प्रजातन्त्र - महावीर

पूर्वानुवृत्ति

वैशाली गणतंत्र आजातशत्रु द्वारा नष्ट कर दिया गया था। यद्यपि आजातशत्रु स्वयं गणपति चेटक का दौहित्र था किन्तु साम्राज्य विस्तार की लिप्सा से वशीभूत हो उसने वैशाली गणतंत्र को नष्ट कर दिया। इस कार्य में उसने अपने मंत्री को सहयोगी बनाया। आपस में फूट डलवा कर ही उसने वैशाली का विनाश करवाया। महाभारत में भी गणतंत्रों के ह्मास का यही कारण बताया गया है। युधिष्ठिर के एक प्रश्न के उत्तर में भीष्म पितामह ने आपसी विद्वेष एवं लोभ को ही गणों एवं राजकुलों के पतन का कारण बताया था।

जैन साहित्यानुसार वैशाली में आक्रमण का कारण सेचानक हाथी तथा १८ लड़ियों का हार था, जिसे श्रेणिक ने अपने पुत्र हल और बेहल्ल को दिया था और जिसे आजातशत्रु हड़पना चाहता था। जैन सूत्रों के अनुसार यह युद्ध १६ वर्षों तक चला और अन्त में वैशाली मगधराज्य का अंग बन गयी। वैशाली के लिच्छवि वंश के परवर्ती इतिहास का वर्णन हमें नेपाल के इतिहास में मिलता है। **श्री रे चौधरी** के अनुसार ये नेपाल में ७वीं शताब्दी तक क्रियाशील थे। गुप्त सम्राट समुद्र गुप्त भी लिच्छवि दौहित्र थे। कल्पसूत्र में वर्णन मिलता है कि महावीर के निर्वाण के बाद मल्लो और लिच्छवियों ने प्रकाशोत्सव तथा दीपमालाओं का आयोजन किया था। जिस रात भगवान महावीर ने मोक्ष प्राप्त किया उसी रात्रि काशी कौशल के १८ संघीय राजाओं नव मल्लो तथा नव लिच्छिवियों ने प्रकाशोत्सव का आयोजन किया। स्व. रामधारी सिंह जी दिनकर ने अपनी काव्य शैली में वैशाली गणतन्त्र के प्रति श्रद्धांजली व्यक्त करते हुये कहा हैं –

वैशालीजन का प्रतिपालक, गण का आदि विधाता
जिसे ढूँढता देश आज, उस प्रजातन्त्र की माता
रुको! एक क्षण पथिक, यहां मिट्टी को सीस नवाओ
राज-सिद्धियों की सम्पत्ति पर, फूल चढ़ाते जाओ।

डा. ए ऐस अल्तेकर ने इन गणराज्यों की व्याख्या करते हुये स्पष्ट लिखा है कि "यह स्वीकार्य है कि यौद्येय, शाक्य, मालव तथा लिच्छिवि गणराज्य आज के अर्थों में लोकतन्त्र नहीं थे एवं सार्वभौम शक्ति समस्त वयस्क नागरिकों की संस्था में निहित नहीं थी फिर भी इन राज्यों को हम गणराज्य कह सकते हैं - स्पार्टा, एथेन्स, रोम, मध्ययुगीय, वेनिस, नीदरलैण्ड और पोलेण्ड को गणराज्य कहा जाता है यद्यपि इनमें से किसी में पूर्ण लोकतन्त्र नहीं था। सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि तथा एतिहासिक साक्ष्य के आधार पर निश्चय ही प्राचीन गणराज्यों को उसी अर्थ में गणराज्य कहा जा सकता है जिस अर्थ में युनान तथा रोम के प्राचीन राज्यों को गणराज्य कहा जाता है। इन राज्यों में सार्वभौम सत्ता किसी एक व्यक्ति या अल्पसंख्यक वर्ग को न मिल कर बहुसंख्यक वर्ग को प्राप्त थी।"

श्री रे चौधरी के अनुसार वैशाली की अधिकांश जनसंख्या क्षत्रिय थी तथा वैदिक धर्म के साथ उनका मैत्री भाव नहीं था। मनु स्मृति में इन्हें व्रात्य बताया गया है । जो जैन पर्यायवाची शब्द है। वैशाली जनपद के दक्षिण में मणि और मलय नाम के दो छोटे जनपद थे तथा पूर्व में अंग देश था जिसकी राजधानी चम्पा थी। अथर्ववेद (१५/२/४५) में व्रात्यों का प्रिय धाम प्राची दिशा बताया गया है। शतपथ ब्राह्मण (१/४/१०१) में मागधों को ब्राह्मण तथा वेद से बाहर बतलाया गया है। मनु स्मृति में इन जनपदो में जाना निषेध किया गया है क्यों कि इन जनपदों के निवासी ब्राह्मण नहीं थे। ये वातरशना, मुनि, अर्हत, व्रात्य, निर्ग्रंथ, तथा श्रमण तीर्थंकरो की परम्परा के उपासक तथा अनुयायी थे। यहाँ पर नाग, यक्ष, वज्जि, लिच्छिवि, ज्ञातृक मल्ल, मल्ल मोरिय, कोलिय, भंगी आदि अवैदिक जातियाँ पल्लवित हुई जिनकी सभ्यता वैदिक सभ्यता की अपेक्षा श्रेष्ट तथा उत्कृष्ट थी। इस क्षेत्र में नाग जाति का प्राधान्य भी काफी समय तक बना रहा था।

तीसरी तथा चौथी शताब्दी में आचार्य संघदास गणिवाचक द्वारा रचित वसुदेव हिण्डी में अंग और मगध जनपद का काफी विवरण मिलता है। अंग जनपद की राजधानी चम्पा थी। यहाँ गाय, भैंस पालने वाले गोप अधिक थे अतः दूध - घी आदि का व्यापार ज्यादा होता था। दस्यु भी थे जो लूट मार करते थे। चम्पा नगरी श्रेष्ठियों और सार्थवाहों का प्रमुख

और समृद्ध केन्द्र थी। भ्रमणार्थ वसुदेव जब चम्पापुरी आये तो चारूदत्त की पुत्री गन्धर्वदत्ता को संगीत में पराजित कर उससे विवाह किया था। आचार्य संघदास गणि के अनुसार अंग जनपद का मन्दार पर्वत मेरुपर्वत का प्रतिरूप था। इस पर्वत की प्राचीनता का उल्लेख कुर्म पुराण, वामन पुराण और वराह पुराण में भी मिलता है।

भारत में सिकन्दर के आक्रमण के समय भी गणराज्यों के आस्तित्व का पता हमें मैगस्थनीज और टोलमी आदि के विवरणों से प्राप्त होता है। सिकन्दर का सामना पंजाब और सिन्ध के गणराज्यों ने बड़ी बहादुरी से किया था। झेलम और चेनाव नदियों के संगम पर उसे मल्लोई (मालक) और आक्सीड्रकेयी (क्षुद्रक) नामक जातियों के गणतान्त्रिक संघ से लड़ना पड़ा था। मालव लोगों ने बड़ी वीरता पूर्वक सिकन्दर का प्रतिरोध किया था। सबरकेय **(Sabarcai)** राज्य भी गणराज्य था जिसने सिकन्दर का सामना किया था। यह राज्य सिन्धु नदी के किनारे तक था और उसके पास ६१००० पैदल ६००० अश्वारोही तथा ५०० रथ थे। (प्राचीन भारत-डा. रमेशचन्द्र मजूमदार) मैगस्थनीज का कथन है कि उस समय उसने अनेक भारतीय नगरों में लोकतान्त्रिक व्यवस्था देखी थी।

मौर्य साम्राज्य की स्थापना इन गणराज्यों के लिये विनाशकारी हुई। अर्थशास्त्र में लिखा है कि उचित-अनुचित चाहे जैसे भी उपायों से हो इन गणतन्त्रों को समाप्त करना चाहिये तथा कौटिल्य ने उस समय मगध के आस-पास के सभी गणराज्यों को समाप्त कर दिया। मौर्य काल के पतन के पश्चात् यौद्येय, मालव, आर्जुनायन आदि कुछ राज्यों में पुनःशक्तिशाली लोकतन्त्र पनपा तथा भारतीय इतिहास में इनका महत्वपूर्ण स्थान रहा है। चौथी शताब्दी में समुद्रगुप्त ने इनमें से अधिकांश को जीत लिया। इस प्रकार हम देखते हैं कि ५वीं शताब्दी तक भारत में लगभग गणराज्यों का अस्तित्व लगभग खतम हो गया।

पद्मपुराण में स्पष्ट लिखा है कि श्रेष्ठ राजा को लोकतन्त्र, व्याकरण एवं नीतिशास्त्र का ज्ञाता होना चाहिये। राजा को ब्राह्मण, स्त्री, बालक, पशु, निहत्थे तथा दूत पर प्रहार नहीं करना चाहियें। राजा चाहे जनता द्वारा चुना गया हो या वंश परम्परा से उसमें राज्य सत्ता की

शक्तियां निहित होती है। शास्त्रों में राजा की मर्यादाएँ निश्चित की गयी हैं जिनके अनुसार राजाओं को वृद्ध व्यक्तियों की सलाह माननी चाहियें क्यों कि उनके पास अनुभव होता है। राजा प्रजा से कर लेता है एवं उसके बदले वह प्रजा का नेतृत्व करता है, सुरक्षा करता है, दुष्ट पुरुषों का निग्रह तथा श्रेष्ठ पुरुषों का पालन करता है। महापुराण के अनुसार राजाओं में छह गुण सन्धि, विग्रह, यान, संस्था और द्वैधी भाव का होना अनिवार्य है। हरिवंश पुराण में लिखा है कि वही व्यक्ति राजा बनने के योग्य होता है जिसमें सूर्य की सी प्रभा होती है। आचार्य गुणभद्र ने अपने उत्तरपुराण में लिखा है कि जो राजा दण्ड का प्रयोग नहीं करता वह श्रेष्ठ माना जाता है इस प्रकार राजा सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक, सभी क्षेत्रों में सर्वगुण सम्पन्न व्यक्ति होना चाहिये।

आज का राजनैतिक चिन्तन प्रजातन्त्रात्मक व्यवस्था को सर्वोत्तम व्यवस्था मानता है। यह चिन्तन प्राचीन राजनैतिक परिस्थितियों तथा उच्च कोटि के दार्शनिको के सिद्धान्तों की उपज है। भगवान महावीर से पूर्व तथा उनके पश्चात् राजनैतिक सिद्धान्तों पर अनेक विचारकों ने समय-समय पर अपने विचार रखे। इसी सन्दर्भ में पाश्चात्य दार्शनिकों के विचारों पर भी एक दृष्टि डालेंगे।

पाश्चात्य दर्शन में राजनैतिक चिन्तन का प्रारम्भ हमें यूनान से मिलता है। इतिहासकार बार्कर का भी यही मानना है कि **Political thought begins with greeks.**

यूनानी लोगों के राजनैतिक चिन्तन का प्रारम्भ हमें ६०० ई. पू. उनके नगर राज्यों द्वारा मिलता है। भगवान महावीर के समय जहाँ भारत में अनेक गणराज्य थे उसी प्रकार यूनान में भी नगर राज्य थे जहाँ की शासन व्यवस्था बहुत कुछ गणराज्यों की भाँति ही थी ।

होमर की रचनाओं से विदित होता है कि पहले (ई. पू. ७वीं शताब्दी में) राजतन्त्र था लेकिन बाद में अल्पतन्त्रीय व्यवस्था कायम हुई। जब इस व्यवस्था में भ्रष्टाचार और मनमाना शासन होने लगा तो जनता ने विद्रोह कर लोकतन्त्रात्मक शासन का एक लम्बा युग प्रारम्भ किया।

यूनान के नगर राज्यों में एथेन्स और स्पार्टा प्रमुख थे। स्पार्टा में शासन के तीन अंग थे। सभा-जिसमें सभी स्पार्टन शामिल होते थे। २१ सदस्यों की सीनेट थी जिसका चुनाव जीवनभर के लिये होता था। दो राजा जिनके अधिकार समान थे और पाँच अधीक्षको की एक परिषद होती थी जिसका चुनाव प्रतिवर्ष होता था। एथेन्स की सम्पूर्ण शासन शक्ति नागरिकों में निहित थी। वहाँ नागरिक होने का अर्थ प्रशासन के कार्यों में सक्रिय भाग लेना। नागरिकों की सभा उच्चतम संस्था थी। सरकार के सभी अंग इस सभा के प्रति उत्तरदायी थे। इन अंगों में एक परिषद् प्रमुख थी जिसमें ५०० के लगभग पार्षद थे जिनका चुनाव होता था। यह कार्यपालिका सम्बन्धी सभी कार्य करती थी।

यूनान के अन्य नगर राज्यों में विभिन्न प्रकार की शासन प्रणालियाँ थी। जिनका स्वरूप समयनुसार बदलता रहता था तथा इनमें निरन्तर संघर्ष भी चलता रहता था। स्पार्टा के अल्पतन्त्र और एथेन्स के लोकतन्त्र के बीच प्राय संघर्ष होता था। मेराथन के युद्ध में एथेन्स की ईरानियों पर विजय से ऐथेन्स यूनान के प्रमुख राज्यों में गिना जाने लगा था।

सोफिस्ट यूनान के पहले विचारक थे जिन्होंने वहाँ के राजनैतिक चिन्तन पर अत्याधिक प्रभाव डाला। यहाँ तक कि **Plato** और **Aristotle** के विचारों की पृष्ठभूमि सोफिस्ट विचार धारा से ही बनी। **Sophist** किसी एक केन्द्रीय विचार धारा **School of thought** के सदस्य नहीं थे।

यह आश्चर्य जनक बात है कि ये सोफिस्ट यूनान के नहीं थे, अपितु बाहर से आये थे तथा इन्होंने यूनानियों को शिक्षित किया था। **Sabine के अनुसार-ये भ्रमणशील शिक्षक थे।** ५०० ई. पू. ऐथेन्स के लोकतन्त्र में जन सभाओं का प्रचलन था जहां वाक् निपुणता की आवश्यकता थी और ये सोफिस्ट अपने विद्यार्थियों को भाषण कला, दर्शन और राजनीति की शिक्षा देते थे। सुकरात सोफिस्टों को **Lovers of wisdom and learning** कहता था। ये हर विषय के ज्ञाता थे। ये लोग मानवतावादी थे। शायद ही कोई विषय इनसे अछूता रहा था। सोफिस्ट

विचारक प्रोटेगोरस के अनुसार सभी वस्तुओं का मापदण्ड मनुष्य है। ये पहले विचारक थे जो यह मानते थे कि- **Man is the measure of all things. Man is the real study of mankind.** इन्हीं लोगों ने सिखाया कि मनुष्य ही सभी चीजों का प्रमाण है जो आधुनिक लोकतन्त्रात्मक व्यवस्था का महत्वपूर्ण आधार है। **Sabine** के अनुसार प्लेटो और अरस्तु के विचारों की पृष्ठभूमि इन्हीं लोगों ने तैयार की थी। **Sophist** शब्द यूनानी भाषा के **Sofhia** शब्द से निकला है जिसका अर्थ होता है बुद्धिमान अथवा प्रज्ञावान। **डेल्फी के मन्दिर में लिखित वाणी - मनुष्य! तुम अपने को जानो (आत्मानं विद्धि) सोफिस्ट विचारधारा का ही प्रतिबिम्ब है** जिसने सुकरात को भी प्रभावित किया। सुकरात को भी **Sophist** समझकर प्राणदंड की सजा दी गयी थी। इस प्रकार इन सोफिस्टों ने राज्य दर्शन के भावी विकल्प का मार्ग प्रशस्त किया। इनका दर्शन पाँचवी शताब्दी ईसा पूर्व तक सर्व साधारण तक फैल गया था। यह काल यूनान का **Classical** युग माना जाता है इसी समय यूनान में प्रजातान्त्रिक नेताओं का जन्म हुआ था। सुकरात का शिष्य **Plato** भी इसी युग की देन है। इसके समय में ऐथेन्स स्पार्टा से युद्ध में हारा था, अतः इस घटना का प्लेटो के विचारों पर स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। वह प्रथम व्यक्ति था जिसने कहा कि राज्य पर सर्वाधिक धनवान्, सर्वाधिक महत्वकांक्षी या सर्वाधिक चालाक व्यक्तियों का नहीं वरन् सर्वाधिक बुद्धिमान व्यक्तियों का शासन होना चाहिये।

"He is first and perhaps the last . Who maintained that a state ought to be governed not by the wealthiest or the most ambitious or the most cunning but by the wised" - Shelley.

Plato की यह घोषणा कि शासन सत्ता केवल उन लोगों के हाथ में होनी चाहिये जो आर्थिक स्वार्थों से निर्लिप्त तथा इहलौकिक आकर्षण से परे हों आज भी उतनी ही सत्य है जितनी कि उस समय में। **Plato** के प्रसिद्ध ग्रन्थ **Republic** में राज्य की आदर्श व्यवस्था का उल्लेख है। प्लेटो के अनुसार राज्य की उत्पत्ति तीन चरणों में हुई है तथा उसने मानव की आर्थिक आवश्यकताओं को ही राज्य की उत्पत्ति का प्रमुख

आधार माना। उसके अनुसार राज्य मानव समाज की आवश्यकताओं से उत्पन्न होता है- प्रथम चरण में उत्पादक वर्ग का उदय द्वितीय चरण में सैनिक वर्ग का तथा तृतीय चरण में सैनिक वर्ग में से ही एक सर्वोच्च संरक्षक वर्ग का निर्माण जो विवेकी होते हैं। इस संरक्षक वर्ग के पास न सम्पत्ति होती है ना परिवार। राज्य उनकी सभी आवश्यकताओं का प्रबन्ध करता है। प्लेटो की यह साम्यवादी विचारधारा मौलिक नहीं थी उससे पूर्व ही इसकी उत्पत्ति हो चुकी थी। पाइथागोरस का मत था मित्रों की सम्पत्ति पर सबका समान रूप से अधिकार होता है। एक जनश्रुति के अनुसार प्लेटो ने १२ वर्ष तक मिस्त्र, इटली तथा भारत के गंगा तट की यात्रा कर ज्ञान अर्जन किया था।

क्रमशः

कर्म की कहानी

श्री सुयश मुनि जी

संसार विचित्र है। यहां रोज नई-नई घटनाये देखने को मिलती है। कोई आनन्द सुख के सागर में खेल रहा है तो कोई अपना पापी पेट भरने के लिये द्वार-दार भटक रहा है। किसी के पीछे हजारों सेवाकारी हैं तो कोई एक ग्लास पानी के बिना रास्ता किनारे पड़ा-पड़ा तड़प रहा है।

इन सभी स्थितियों को देखकर स्वाभाविक विचार आता है ऐसा क्यों हुआ? किसने किया? और किया तो क्यों किया?

वास्तविकता को समझने के लिये कुछ सत्य घटनायें।

(१) एक विकसित समृद्ध शहर। शांत वातावरण में सभी सम्पन्न, धनी लोगो का भव्य राजमहल निवास स्थान। यहाँ सभी वैभव में मस्त है अपने अतिरिक्त अन्य की सुख सुविधा सोचना भी इन लोगों के लिए व्यर्थ का काम है। यहाँ लोग संतान से भी अधिक धन को महत्व देते है। साहब के कुत्ते भी राजसुख भोग रहे है।

एक दिन यहाँ कुछ मिलने की आशा को लेकर एक गरीब आ पहुँचा। गरीबी दशा में उचित और भरपेट भोजन नहीं मिलने के कारण शरीर दुर्बल हो चुका था। चलने-फिरने में भी असमर्थ था। मात्र मरने के नाम पर जीवन को ढो रहा था। दो दिन से भूखा था कुछ पाने की आशा से एक महलनुमा भव्य मकान के मुख्य द्वार पर जा पहुँचा। उस दुर्भागी को दरवाजे पर खड़ा देखते ही कद्दावर चौकीदार कठोर भाषा में बोला——— चले जाओ यहाँ से-!

अभाव ने उसे नासमझ भी बना दिया था चौकीदार की भाषा को वह समझ नहीं सका। अशक्ति के कारण कुछ बोलना भी संभव नहीं था। आँखों में अधेरा छाने लगा। मौत का दर्शन होने लगा।

जीवन से मृत्यु दुःखद नही कभी-सुखमय भी लगती है।

आँखों के सामने मौत की छाया देखते ही वह भूत काल में पहुंच गया। जन्म याद आ गया। एक चल चित्र चलने लगा———सूरा, सुन्दरी और सम्पत्ति में आकण्ड डूबा जीवन। वर्तमान को भूलकर भूतकाल की स्मृतियों में डूब गया।

तभी एक जोरदार डंडा की मार खाकर संभले हुये वर्तमान में

लौट आया। जैसे एक स्वप्न टूटा! कानो में शब्द सुनायी पड़ा- हरामखोर साहब का आने का समय हो गया है। तेरे पाप से हमारा भी सत्यानाश हो जायेगा। भागता है या नहीं?

पर उठे कौन। सुनते हुए भी अनसुना होकर बैठा रहा। असहाय और करता भी क्या दूसरा कोई उपाय उसके पास नहीं था।

अच्छा तो तुं अब हाथ पैर लेकर यहाँ से नहीं जायेगा? अब तुझे विदाई की दक्षिणा दे ही देता हूँ। ऐसा कहते हुए चौकीदार ने एक जोरदार लाठी माथा में मारा जिससे खोपड़ी फटकर खून की धारा वहने लगी। खून के साथ प्राण भी निकल गये। पर चौकीदार को कोई असर नहीं हुआ, क्यों कि वहाँ तो सब कुछ खून से ही बना था। पास के खड्डे में घसीट कर डाल दिया गया। उसके लिये अब न कोई था, रोने वाला और न देखने वाला। अपने ही हाल में बेहाल होकर जीवन को समाप्त कर दिया। ४-६ दिन के बाद अवशेष के रूप में वहाँ मात्र २/४ हड्डियाँ पड़ी थी।

(२) बारह वर्ष की एक देवी जैसी लड़की देखने में रूपवती, पढ़ने में सरस्वंती, घर परिवार, प्रतिवेशी के लिये लक्ष्मी। सभी के लिये प्रिय खिलौना। एकबार देखने के बाद उसको कोई नही भूलता था।

पर दुर्भाग्य——! एक बार शरीर में सफेद दाग दिखाई दिया। देखते ही देखते सम्पूर्ण शरीर में फैल गया। बहुत उपाय किया गया पर कोई लाभ नहीं हुआ। रूपवती अब कुरुपी बन गई।

(३) एक ग्रामीण दम्पत्ति। मेहनत मजदूरी करके सत्य निष्ठा पूर्वक जीवन निर्वाह करने वाले। एक सन्तान उसे उच्चशिक्षित बनाने की तमन्ना में स्वयं मजदूरी कर, बच्चे को लिखाई पढ़ाई करवायी, उच्च शिक्षा के लिये बच्चे को शहर भेजा, स्वयं न खापीकर उसे खर्च भेजता रहा।

क्रमशः

भगवान् महावीर दीपावली जिनका परिनिर्वाण पर्व है

उपाध्याय अमरमुनि जी

पुर्वानुवृत्ति

बड़े-बड़े सम्राट्, राजकुमार, रानियाँ, महामंत्री, सेनापति, श्रेष्ठी गाथापति, गृहस्थ और सामान्य प्रजाजन भी उनके चरणों में बैठकर सत्य का दर्शन कर सके और यथाशक्ति उस स्थान पर चलने का दृढ़ संकल्प भी।

इस प्रकार श्रमण भगवान् महावीर का तीस वर्ष का तीर्थंकर जीवन बहुमुखी एवं बहुकृतित्व-संपन्न जीवन रहा है। एक महान् धर्म-शास्ता, सत्य उपदेष्टा, करुणावतार और परम साधक का जीवन है वह! उनके जीवन में साधना का जो अखण्ड दीप जला, वह फिर कभी बुझने न पाया। उस दीप से दीप जलते गये– हजारों और लाखों ही! और वह प्रकाश महाप्रकाश बनकर फैलता गया जन-जीवन में! भगवान् ने अन्धकार में भटकने वालों को वह ज्ञान-ज्योति दिखाई, जिसे पाकर हर आत्मा ज्योति स्वरूप बन जाता है।

जीवन का ७२ वाँ वर्ष उनकी संसार-यात्रा का अन्तिम वर्ष था। अन्तिम वर्षावास मध्यम पावा में हस्तिपाल राजा की रज्जुक सभा में हुआ था। प्रभु ने उससे पूर्व ही अपने सब कार्य संपन्न कर दिए, पूर्ण कर लिए। उस दिन वे बड़ी लम्बी धर्म देशना कर रहे थे। काशी और कोशल गणराज्यों के नवमल्लि और नव लिच्छवि राजाओं ने प्रभु का अन्तिम उपदेश सुना, अन्य भी हजारों श्रद्धालु हृदयों ने प्रवचनामृत का पान कर अपने को धन्य बनाया। अन्तिम उपदेश धारा में वैराग्य और कर्तव्य का जो विशिष्ट उपदेश भगवान् ने दिया वह आगे चलकर उत्तराध्ययन सूत्र के रूप में संकलित किया गया। उत्तराध्ययन सूत्र, उस महान साधक की सुदीर्घ साधना का नवनीत है जो आज भी साधक आत्माओं के विचारदेह को परिपुष्ट कर रहा है। भगवान् महावीर की यह अन्तिम वाणी शिष्यों का सम्बल बनी, सहारा बनी! वे इस ज्योतिर्मय सन्देश को पाकर धन्य-धन्य हो गए।

प्रभु के निर्वाण होने पर सहसा भयंकर अन्धकार छा गया। वह महान् आलोकपुंज भूमण्डल से विलीन हो गया। संसार खोया-खोया सा देखता रहा, अँधेरे में टटोलता रहा। पर, वह ज्योति अब नहीं रही। वह कारुण्य का मूर्तिमान देवता अब इस देह-मंदिर का त्याग कर अनन्त, अक्षय, अचल, चिद्ज्योति मन्दिर में प्रतिष्ठित हो गया था।

कहते हैं रात्रि के घने अन्धकार को मिटाने के लिए भक्तजनों ने मणि रत्नों से प्रकाश किया, उजाला फैलाया। पर क्या वह दिव्य प्रकाश उस भाव अन्धकार को भेद सका? बिल्कुल नहीं। अज्ञान के गहन अन्धकार में प्रकाश की एक महान रेखा, जो वह प्रकाश-पुञ्ज अपने पीछे उपदेश के रूप में छोड़ गया है, वही वास्तव में संसार के इस आन्तरिक अन्धकार को मिटा सकती है, जीवन में नया आलोक और नया उल्लास भर सकती है। वह अपनी देशना की अन्तिम थाती हमें सौंप कर गया है, अपनी सिद्धान्तज्योति हमारे हाथों में थमाकर गया है, और लाक्षणिक भाषा में कह गया है, कि मेरी अनुपस्थिति में यही तुम्हारा पथ प्रदर्शन करेगी, इसी के प्रकाश में तुम अपनी जीवन-यात्रा पर बढ़ते जाना।

वास्तव में, आज हमें उसी आलोक में अपने जीवन की अन्धकाराच्छन्न स्थितियों को प्रकाश में बदलता है, उन्हीं चरण-चिहों पर चलने का महान् संकल्प करना है। हम सबके लिए यही उस महापुरुष भगवान् महावीर की सच्ची स्मृति है, यही उनकी जयन्ती है और यही उनका जन्म-कल्याणक है।

साभार - "श्रमण" नवम्बर १९८२

तीर्थंकर महावीर का निर्वाण-पर्व दीपावली एक समीक्षा

श्री गणेश प्रसाद जैन

आज से २५०९ वर्षों पूर्व मध्यमा-पावा में तीर्थंकर महावीर का निर्वाण हुआ था। दिगम्बर-परम्परा में यह समय कार्तिक-कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि का अन्तिम प्रहर एवं अमावस्या का उषा-काल माना जाता है, जब कि श्वेताम्बर-परम्परा में अमावस्या की रात्रि का अन्तिम प्रहर है।

तीर्थंकर-महावीर ने अपने निर्वाण से पूर्व अपने प्रमुख शिष्य और प्रथम गणधर इन्द्रभूति-गौतम को अन्तिम उपदेश देते हुए कहा था—

समयं गोमय मा पमायए — अर्थात् — हे गौतम! क्षणभर भी प्रमाद न कर। भगवान् महावीर की इस चेतावनी ने गौतम की आत्म-वीणा के प्रत्येक तार झंकृत कर दिया, और उसी प्रेरणा से इन्द्रभूति गौतम अर्हत् या केवली बन गये। उन्होंने तीर्थंकर महावीर का धर्म चक्र सम्हाल लिया और अहिंसा, समता-वीतरागता का जन-जन को उपदेश देने लगे।

तीर्थंकर महावीर के निर्वाण के समय वहाँ नौ लिच्छवी और नौ मल्लराजा (गण-तन्त्र-नेता) तथा भक्त-जन उपस्थित थे। उन्होंने ज्ञान सूर्य के अवसान हो जाने पर स्नेह-पूरित (घी से भरे) दीप-मालिका-संजोकर तीर्थंकर-महावीर का निर्वाणोत्सव मनाया। इस समाचार के प्रसारित होते ही (उस दिन) समस्त नगरों एवं ग्रामों में सभी स्थलों पर दीप-मालिका-संजोकर दीपावली महोत्सव मनाया गया। उसी दिन से तीर्थंकर महावीर के निर्वाणोत्सव का प्रतीक यह दीपावली (दीवाली) पर्व बना और तब से आज तक जन-जन, बड़े समारोह से दीपावली पर्व मनाता आ रहा है। यह अब किसी विशेष-सम्प्रदाय का नहीं, राष्ट्रीय पर्व है। जैन परम्परा का कहना है कि इन्द्रभूति गौतम गण-नायक अर्थात् गण ईश गणेश थे और उन्हें केवलज्ञान रूपी लक्ष्मी प्राप्त हुई थी। गणेश और लक्ष्मी के संयुक्त पूजन की प्रथा उसी दिन से प्रारम्भ हुई। देश का

व्यापारी-समाज उसी दिन से अपने व्यापार का नया वर्ष गौतम गणेश और केवल ज्ञान रूपी लक्ष्मी का पूजन करके प्रारम्भ करने लगा। आज तक यह प्रथा विद्यमान है।

उस दिन इन्द्र और देवों ने आकाश से रत्नों की वर्षा की थी, उसके प्रतीक रूप में आज धान के लावे (खील) की वर्षा की जाती है। महोत्सव मनाते हैं और तीर्थंकर महावीर की वाणी का स्मरण करते है-

तीर्थंकर महावीर का इन्द्रभूति गौतम गणधर को अन्तिम उपदेश था—गौतम! क्षण भर भी प्रमाद न कर, मनुष्य जीवन को सार्थक बना। उनके उपदेश के कुछ अंश निम्न है—

दुमपत्तए पंडुयए जहा, निवडइ राइगणाण अच्चए।
एवं मणुयाण जीवियं, समयं गोयम मा पमायए।।

अर्थात् — जैसे पतझड़ ऋतु की रातों के बीत जाने पर वृक्ष का पत्ता-पीला पड़ कर झड़ जाता है, वैसे ही यह मनुष्य का जीवन है, न जाने कब समाप्त हो जाय। अतः हे गौतम! क्षण भर भी प्रमाद न कर।

दुलहे खलु माणुसे भवे, चिरकालेण वि सव्व पाणिणं।
गांढा य विवाग कुम्मणो, समयं गोयम मा पमायए।।

चिरकाल के बाद भी (इस) मनुष्य-जन्म का पाना अत्यन्त दुर्लभ है, — क्योंकि-पूर्व कर्मों के विपाक-प्रबल होते हैं। हे गौतम! क्षण मात्र भी प्रमाद न कर।—

वोछिन्द सिणेहमण्पणो, कुमुयं सारइयं व पाणियं।
से सव्वसिणेहवज्जिए, समयं गोयम मा पमायए।।

जैसे कमल पुष्प शरद् काल के निर्मल जल को भी नहीं स्पर्श करता, उससे-अंलिप्त बना रहता है, उसी प्रकार तू भी इस संसार से अपनी आसक्ति दूर कर, सब प्रकार के मोह-बन्धनों को छेद डाल। गौतम! एक क्षण का भी प्रमाद न कर—

तिण्णो हु सि अण्णंव महं किं पुण, चिठ्ठसि तीरमागओ।
'अभितुर पारं गमित्तए, समयं गोयम मा पमायए।।

तू महान् संसार-समुद्र को तैर चुका है, अब किनारे आकर क्यों अटक रहा है। उस पार जाने की जितनी हो सके शीघ्रता कर, गौतम! क्षण भर भी प्रमाद न कर।

तीर्थंकर महावीर के उपरोक्त वचन अति मूल्यवान हैं। इसे अंगीकार करने वाला इस मानव-जीवन की यात्रा को निर्विघ्न पूरा कर अवश्य ही मोक्ष लक्ष्मी को प्राप्त करता है।

दीपावली और अन्य धर्म परम्पराएँ

तीर्थंकर महावीर के निर्वाण महोत्सव-दीपावली-पर्व की महत्ता और व्यापकता से प्रभावित होकर अन्य धर्मावलम्बी अपने धर्म से इसके सम्बन्ध जोड़ने लगे हैं। स्वामी दयानन्द, स्वामी रामतीर्थ, गुरुगोविन्द सिंह की विशिष्ट-जीवन-घटनाओं का इस तिथि (पर्व-दिन) से अवश्य सम्बन्ध है, किन्तु उनसे-यह पर्व प्रारम्भ हुआ ऐसा ऐतिहासिक कथन नहीं है। इन महानुभावों को हुए-केवल मात्र ३००-४०० वर्ष कुल हुए हैं और दीपावली पर्व को प्रारम्भ हुए २५०० वर्षों से अधिक। यह निश्चय ही तीर्थंकर महावीर का निर्वाण दिवस पर्व है।

हिन्दू परम्परा में भगवान् राम के राज्योत्सव से भी दीपावली-महोत्सव का सम्बन्ध जोड़ा जाता है, — किन्तु पूर्णरूपेण आज भी निर्णय नहीं हो पाया है कि — राम केवल मात्र काव्य में ही जीवन्त हैं या केवल पौराणिक आख्यान के नायक मात्र हैं अथवा इतिहास से भी प्रमाणित हैं।

मुनि वाल्मीकि को राम का समकालीन कहा गया है। सीता निर्वासन-काल नें उन्हीं के आश्रम में निवास करती थीं, वहीं उन्हें लव और कुश नाम के दो पुत्र भी हुए थे। राम की जीवन-कथा (वाल्मीकि रामायण) भी सर्व प्रथम उन्होंने ही रची। राम-कथा का सबसे प्रमाणिक ग्रन्थ भी वही है। परन्तु मुनि वाल्मीकि ने भी राम के राज्याभिषेक के अवसर पर दीपावली उत्सव का कथन अपनी रामायण में नहीं किया है। अपितु उन्होंने राम के अयोध्या लौटने की जो तिथि लिखी है, उससे यह सिद्ध है कि राजा राम का राज्याभिषेक दीपावली-पर्व से कई माह पूर्व हो चुका था।

वनवास की अवधि पूर्ण कर राम जब अयोध्या लौटे तब वह प्रयाग (इलाहाबाद) में मुनि भारद्वाज के आश्रम पर वैशाख कृष्णा पंचमी को पहुँचे थे; — और वहाँ से उन्होंने भरतराज को हनुमान द्वारा अयोध्या अपने आगमन का सन्देश भेजा था।

पूर्णे चतुर्दशे वर्षे पंचम्यां लक्ष्मणा अग्रजः। भरद्वाजाश्रमं प्राप्य प्रहिणोद वधं हनुम्।। सहसीतः ससौमित्रः सत्वां कुशलमब्रवीत्। पंचनी-मथ-रजनी मुषिता वचनान्मुनैः।।

उपरोक्त श्लोक से स्पष्ट है कि रामचन्द्रजी चैत्र शुक्ला चतुर्दशी को रावण पर विजय प्राप्त कर उसकी अन्त्येष्टि करवा कर और विभीषण को लंका के राज्यसिंहासन पर तिलक कर, एक सप्ताह के भीतर ही पुष्पक विमान से प्रयाग आकर भारद्वाज मुनि के आश्रम में पधारे और अगले दिन ही अयोध्या में उनका स्वागत और राज्याभिषेक हुआ।

पंज़ाब के प्रसिद्ध साहित्यकार श्री हरवंशलाल चोपड़ा ने उर्दू-दैनिक प्रताप में दिनाँक १४/११/५८ (पृ० ५) में लिखा है कि दशहरा और दीपावली में बीस दिनों का अन्तर है। रावण के मारे जाने पर विभीषण ने राम से चार दिन लंका में रुकने की प्रार्थना की थी, परन्तु राम ने विभीषण के उस आग्रह को अस्वीकार कर दिया था और कहा था– कि वनवास की अवधि पूर्ण होते ही यदि मैं—अयोध्या नहीं पहुँच जाता हूँ, तो अनुज भरत (अपना) प्राण त्याग देंगे।

श्री प्रेमचन्द शास्त्री ने नवभारत-टाइम्स (१७ अक्टूबर, १९७१) में उपर्युक्त विचार प्रकट किया है। पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री (वाराणसी के मतानुसार इतिहास, रामायण एवं हिन्दू-पुराणों में इस सम्बन्ध में (अर्थात् दीपावली महोत्सव के प्रारम्भ होने के बारे में) कोई उल्लेख नहीं है।

श्वेताम्बर जैन सम्प्रदाय के ग्रंथ कल्पसूत्र जो मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त के दीक्षा-गुरु जैनाचार्य, अन्तिम-श्रुतिकेवली भद्रबाहु की रचना है, जिसका रचना-काल ३१७-२९८ ई० पूर्व माना गया है, उसमें भगवान् महावीर के निर्वाणोत्सव के उपलक्ष में लिच्छवी और मल्लों के १८ गण-राजाओं द्वारा दीपावली को मनाया जाना लिखा है।

दिगम्बराचार्य जिनसेन ने अपनी रचना हरिवंश-पुराण (७८३ई०) के ६६ वें सर्ग के श्लोक (१५-२०) में, तथा दिगम्बराचार्य गुणभद्र ने (९ई०श० के उत्तरार्ध) में अपनी रचना उत्तर-पुराण के १६वें सर्ग में, और आचार्य सोमदेवसूरि ने यशस्तिलक-चम्पू में, तथा मुसलमान लेखक अब्दुलरहमान, मुलतान निवासी ने अपने अपभ्रंश-भाषा में रचे ग्रन्थ

सन्देश-रासक (११००ई०) में, सम्राट अकबर के नौवें रत्न श्री अबुलफजल ने आईने अकबरी (१५९०) में, श्री परिपूर्णानन्द वर्मा ने वीर पत्र (१-९-५२, पृ० २) में तथा डा० एल. एन. एल. एल. यल० डी० ने वायस आफ इण्डिया (१९४०, पृ० १३७) पर एवं लोकमान्य गंगाधर तिलक ने, तथा सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं कवि डा० रवीन्द्रनाथ टैगोर ने दीपावली को तीर्थंकर महावीर के निर्वाणोत्सव का प्रतीक पर्व माना है।

मार्गरेट स्टीवेन्सन ने भी इन्साईक्लोपीडिया आफ रिलीजन एण्डईथिक्स (भाग५, पृ०८७५-८७८) में और प्रो० परशुराम कृष्णगोडे क्यूरेटर भाण्डारकर ओरिएन्ट रिसर्च इस्टीट्यूट, पूना ने महावीर स्मृति ग्रन्थ (भाग प्रथम, आगरा) ने लिखा है कि– भगवान महावीर का निर्वाण-दिवस १८ लिच्छवि और मल्लकि एवं अन्य राजाओं द्वारा दीपावली के रूप में प्रारम्भ हुआ है।

प्रो० पृथ्वीराज ने (**Voa. Vol. 1 Part VI, P.9**) लिखा है कि **The night, in which Lord Mahavira attained Nirwan was lighted by Descending and Ascending Gods and 18 Confederate Kings institute an illumination to caleberate Moksha of Lord since then the peo;le make illumination and this, in fact, is orgin of DEPAWALI.**

अर्थात्-उस रात्रि को जब भगवान् महावीर ने निर्वाण प्राप्त किया ऊर्ध्वलोक एवं अधोलोक के देवताओं ने दीप-ज्योति-प्रज्जवलित की और अठारह प्रभुसत्ता सम्पन्न गण राजाओं ने भगवान् महावीर के मोक्षपर्व को मनाने के लिए ज्योति जगा कर ज्योति-पर्व (दीपावली) की स्थापना की। सभी लोग उसी दिन से ज्योति जलाकर तीर्थंकर महावीर का मोक्ष पर्व मनाने लगे हैं। यथार्थतः भगवान् महावीर का निर्वाणोत्सव पर्व दीपावली है।

सन्त तुलसीदास ने अपनी रचना रामचरितमानस के लंका-काण्ड में लिखा है—

लड़े बहत्तर दिन संग्रामा, वानर-राक्षस विन विश्रामा,
बसु दस दिन लड़िसो महिधारा, भूता मधुसित रावण मारा।
चैत सुदी चौदस जब आई, मरो दशानन जग दुखदायी,

अर्थात्-वानरों और राक्षसों का युद्ध बिना विश्राम लिये बहत्तर

दिनों तक अविरत चलता रहा। राम और रावण का युद्ध १८ दिन हुआ। अन्त में रावण को राम ने चैत्र शुक्ला १४ (चौदस) को मार गिराया, उसका वध कर दिया।

राम-लंका के राज्यसिंहासन पर विभीषण का राज्यतिलक करके तुरन्त अयोध्या लौट कर आ गये। वनवास की अवधि समाप्त हो रही थी। अवधि पश्चात् अनुज भरत मृत्यु का वरण करने वाले थे। राम को भरत का जीवन सुरक्षित रखने के लिए तुरन्त अयोध्या पहुँचना आवश्यक था, इसीलिए वह लंका से अति शीघ्र चल पड़े। तुरन्त ही राम का राज्याभिषेक हुआ। राज्याभिषेक की तिथि वैसाख मास के प्रथम पक्ष में पड़ती है।

दीपावली–पर्व से राम के राज्याभिषेक का कोई भी सम्बन्ध नहीं है। दीपावली पर्व केवल मात्र तीर्थंकर महावीर का निर्वाणोत्सव पर्व का प्रतीक है।

साभार - "श्रमण" नवम्बर १९८२

मलयासुन्दरी चरित्र

पुर्वानुवृत्ति

माता पिता ने नव दम्पति को आशीर्वाद दिया कि चंद्र और चांदनी के समान तुम्हारा अविच्छिन्न संयोग कायम रहे। राजा ने अपनी सम्पत्ति के अनुसार हाथी, घोड़ा, रथ, हीरा, माणिक, मोती, शस्त्र और ग्रामादि अनेकानेक वस्तुयें कन्यादान या दहेज में दी। विवाह प्रसंग पूर्ण होने पर हर्षित हुए नवदम्पति एकान्त निवास स्थान में गये। इस समय राजा वीरधवल कुमार के पास आकर, अपने संशय की बातें पूछने लगे। राजकुमार! आप अपने शहर से स्वयंवर के प्रसंगपर अकस्मात् ही एकाकी किस तरह आ पहुँचे?

कुमार ने उत्तर दिया - मुझे पृथ्वी स्थान पुर से उठाकर किसी देवी ने यहाँ पर अकस्मात् लाकर रख दिया है। यह सुन राजा वीरधवल कुछ गर्दन हिलाते हुये बोल उठे-आपका कहना सच है; यह सब कार्य हमारी कुलदेवी का ही किया मालूम होता है।

महाबल-महाराज! मेरे वियोग को न सहन करने वाले मेरे माता-पिता विरह दुःख से दुःखित हुए मेरी चारों तरफ तलाश करते होंगे। अति स्नेहित हृदयवाले माता-पिता की सेवा में यदि मैं बारह प्रहर के अन्दर न पहुँच सका तो सचमुच ही वे मेरे वियोग से प्राणत्याग कर देंगे। इसलिये आप कृपाकर, मुझे जल्दी विदा करें। यदि मैं प्रतिपदा के दिन सूर्योदय से पहले पृथ्वीस्थानपुर पहुँच जाऊंगा तो मेरा अपने पूज्य माता-पिता से मिलाप हो सकेगा; अन्यथा उनका मिलना असंभव सा मालूम होता है।

राजा-कुमार! आपको जरा भी चिन्ता न करनी चाहिये। आपकी तमाम चिंताये अब मेरी हैं। पृथ्वीस्थानपुर यहां से बासठ योजन है। अतः आप रात के प्रथम प्रहर तक सुखपूर्वक यहां रहें; तब तक मैं आपके लिये एक उत्तम जाति की और अतिवेग से चलनेवाली सांडनी तैयार कराता हूँ, तथा कोपायमान हुये उन राजकुमारों को भी सत्कारित कर विदा कर आता हूँ। यों कहकर महाराज वीरधवल वहां से चले गये।

महाबल-प्रिये! हमारा इच्छित कार्य सिद्ध हुआ। तुम्हारे समक्ष की हुई प्रतिज्ञा आज जनता के समक्ष तुम्हारे पिता की सम्मति पूर्वक पाणिग्रहण करने से पूर्ण हुई। परन्तु पृथ्वीस्थानपुर जाकर, अपनी माता को हार देने की की हुई प्रतिज्ञा अभी सफल नहीं हुई, वह पूर्ण होने पर ही हमें शान्ति और आनन्द मिलेगा। कल हम भट्टारिका के मन्दिर में मिले थे। परन्तु अपने-अपने कार्य की चिन्ता होने से दो दिन में किये हुये कार्य सम्बन्धी वार्तालाप करने का विशेष समय नहीं मिला। इस समय महाराज भी हमारे प्रयाण की तैयारी करने गये हैं; इसलिये अब एकांत में उन बातों को जानना चाहिये, महाबल कुमार इसके आगे कुछ कहना ही चाहते थे, इतने में ही वहाँ पर मलया-सुन्दरी की धाय-माता वेगवती आ पहुंची। उसने मलया-सुन्दरी को आकर पूछा - बेटी मलया! सच कह इस घटना का क्या रहस्य है? क्या सचमुच ही यह देव-कर्तव्य है या कुछ बुद्धि-प्रयोग द्वारा रचा हुआ अन्य प्रपंच है?

मलया०-स्वामिन्! मेरे गुप्त रहस्य को जानने वाली और माता से भी बढ़ कर मुझ पर अति प्रेम भाव रखने वाली यह मेरी धायमाता है; इसलिये आप जरा भी संकोच न रख कर इस मेरी धाय वेगवती के समक्ष तमाम वृत्तान्त सुनायें। यह उसे जानने को बड़ी उत्सुक है। मलया सुन्दरी के आग्रह से महाबल ने वेगवती के समक्ष अपना वृत्तान्त सुनाना प्रारम्भ किया - भट्टारिका देवी के मन्दिर से हम अपने-अपने कार्यार्थ अलग हुये थे। वहां तक का वृत्तान्त वेगवती को सुना कर उसके बाद का हाल मलया सुन्दरी को लक्ष्य कर महाबल कहने लगा-प्रिय तुमसे जुदा होकर मैंने तुम्हारी नामांकित अगूंठी को एक घास के पूले में देकर वह पूला हाथी को खिला दिया था। फिर श्मशान की तरफ जाकर सिद्ध ज्योतिषी के वेश द्वारा राजा का बचाव किया और दूसरे दिन संध्या के समय मंत्र-साधना का बहाना ले, और राजा के पास से कुछ द्रव्य लेकर राज-महल से चला गया। बाजार में जाकर उस द्रव्य से कुछ आवश्यक बढ़ई के हथियार, कपूर, कस्तूरी, चंदन, रंग, और वस्त्रादि खरीद कर

मैं भट्टारिका देवी के मन्दिर में गया वहां पर जो काष्ठफाली देखी थी। उसे छील कर खूब रमणीय बनाया। उसके अन्दर गर्भ-भाग में यन्त्र-प्रयोग वाली एक कीलिका लगाई। इसी समय एक सन्दूक लेकर वहां पर चोर आ पहुँचे, उस सन्दूक को एक चोर सहित मन्दिर के पीछे सुरक्षित रख कर बाकी के तमाम चोर वापिस शहर की ओर चले गये। बढ़ई के हथियार और अन्य वस्तुयें एक जगह छिपा कर चोर की संज्ञा से उस चोर को बुलाता हुआ मैं उसके पास गया। मुझे भी चोर समझ कर उस लोभी चोर ने मुझ से प्रार्थना की, मैं इस सन्दूक का ताला नहीं तोड़ सकता, इसलिये आप कृपा कर किसी तरह इसका ताला खुलवा दीजिये। मैंने उसका ताला खोल दिया। उसने सन्दूक में से सारी वस्तुएँ निकाल कर एक पोटली बांधली। उस हीन-सत्व चोर ने मुझे फिर से कहा हे महानुभाव! यदि मैं यहां से चला जाऊंगा तो मेरे पीछे पैर पहचानते हुये चोर या राज-पुरुष मुझे पकड़ लेंगे, इसलिये कृपा कर आप मेरे बचाव का कोई उपाय बतलायें।

इससे वह वहां से आगे पीछे न जा सकती थी। उसके दुःख का कारण पूछने पर, निश्वास डालती हुई उसने उत्तर दिया- हे सत्पुरुष! मैं तुम्हें अपने दुःख की क्या बात सुनाऊं? मेरी बुद्धि कुंठित हो गई है। मैं अपने मकान के आंगन में बैठी थी उस समय कहीं से फिरता हुआ यह धूर्त मनुष्य मेरे पास आ बैठा। मुझे यह मालूम न था यह मनुष्य इतना धूर्त है। मैंने हँसी में उससे कहा-तू मेरा शरीर संवाहन कर, मैं तुझे कुछ दूंगी। वह मनुष्य शरीर संवाहन की क्रिया में बड़ा निपुण निकला। इसने मेरे शरीर को संवाहित कर मेरी तमाम थकावट को दूर कर दिया। मैंने खुश होकर इसे भोजन करने के लिये कहा, वह बोला - मुझे भोजन की आवश्यकता नहीं है, तुमने मुझे कुछ देने के लिये कहा था। इसलिये मुझे अब कुछ दो। मैंने इसे अच्छे वस्त्र, धन, इत्यादि देना चाहा; परन्तु यह धूर्त कुछ भी न लेकर मेरी जबान से निकले हुए कुछ दूंगी इस शब्द को पकड़ कर मुझसे कुछ मांगता है। परन्तु मैं नहीं समझती कि कुछ किस

वस्तु का नाम है? इसी कारण न तो यह खुद जाता है और ना ही मुझे भी यहां से जाने देता है। प्रिय स्वामिन्! यह दशा देख मैंने विचार किया कि वेश्या इस वक्त आपत्ति में फँसी हुई है। यदि मैं इस संकट से इसका उद्धार करूं तो अवश्य ही मेरा निर्धारित कार्य जल्दी सिद्ध होगा। यह सोच कर मैंने मगधा को अपने पास बुला उसके कान में एक बात सुनाई। फिर मैंने उन दोनों से कहा-जाओ इस समय तुम दोनों भोजन करो और तीसरे प्रहर मेरे पास आना मैं अवश्य ही तुम्हारे विवाद का फैसला कर दूंगा।

महाबल-प्यारी! उनका यह विवाद सचमुच ही बड़ा विषम था। तुमने किस तरह इसका समाधान किया।

मलया -स्वामिन्! सो मैं आप को सुनाती हूँ। मैं वहाँ तक के मार्ग परिश्रम से कुछ थक गई थी। अतः मैं वहां पर ही सो गई। तीसरे प्रहर वे दोनों ही मेरे पास आ गये। मगधा ने मुझे उठाया। मैंने गुप्त रीति से उससे देव मन्दिर में एक घड़ा रखवाया और बहुत से लोगों को साक्षी रखकर कहा-देखो भाई! यह अब अपने वचन से पीछे न फिर जाय इसलिये मेरे किये हुये इन्साफ में आप लोग साक्षी रहें। यह बात उस धूर्त ने भी उपस्थित जनता के समक्ष अंगीकार कर ली। इस बात पर लोगों को भी बड़ा आश्चर्य हुआ कि देखें यह नवयुवक इसे कुछ देकर किस तरह फैसला करता है? मेरा इशारा पाकर मगधा ने उसे कहा कि इस मन्दिर के उस कोने में एक घड़ा रक्खा है; उसमें एक चीज पड़ी है। उसे तुम ले आओ, फ़िर तुम्हें कुछ दिया जायेगा। धूर्त ने वहां जाकर घड़े का ढकना उठाकर उसमें हाथ डाला। परन्तु तुरन्त ही फुंफकार मारता हुआ सर्प उसके हाथ से चिपट गया। तत्काल ही उसने घड़े से हाथ पीछे खींच लिया और चिल्लाकर वह बोल उठा अरे! इसमें तो कुछ है? यह सुन मगधा ने हर्ष प्राप्त करते हुए कहा- इसमें तेरे लिये ही कुछ रक्खा हुआ है। और इस कुछ को तू ग्रहण करके अपने घर ले जा। अब मेरे तेरे बीच लेने देने का कुछ सम्बन्ध नहीं रहा। यह देख खुश होकर तमाम लोग हँसकर बोले-वाह रे धूर्त! वस्त्र, धन न लेकर, तूने यह अपने कर्तव्य

के अनुसार अच्छा कुछ लिया? उस धूर्त को सांपने डंस लिया था। इसलिये उसका विष उतारने के लिये उसे तोतला देवी के मन्दिर पर ले जाया गया और मुझे साथ लेकर मगधा अपने मकान पर आ गई।

उसके गृहद्वार में प्रवेश करते ही कुछ आश्चर्य पूर्वक मैंने मगधा से कहा-मगधा! मैं तुम्हारे घर में प्रवेश न करूंगा, क्योंकि मुझे मालूम होता है, तुम्हारे घर में कोई राजद्रोही मनुष्य छिपा हुआ है। मेरे इन शब्दों से भयभीत हो अनेक प्रकार के तर्क-वितर्क करती हुई मगधा मेरे पैरों में पड़ गई और हाथ जोड़ कर बोली- हे भद्र पुरुष! आपने सब कुछ अपने ज्ञानबल से जान लिया है, परन्तु कृपाकर आप यह बात किसी अन्य के सामने न करें। राजा की रानी कनकवती जिसने कपट द्वारा राजा की निर्दोष पुत्री को कल जान से मरवा दिया। उसका कपट प्रगट होने से उसे पकड़ने के लिये चारों तरफ राजपुरुष घूम रहे हैं। बचपन के स्नेह के कारण वह पिछली रात में छिपकर मेरे घर आकर रही है। हे सत्पुरुष! किसी भी उपाय से इस धधकती हुई आग को आप मेरे घर सें बाहर निकालें इससे मैं आपका बड़ा उपकार मानूंगी।

मैंने कहा-यदि मैं इस समय उसे तेरे मकान से बाहर निकाल दूं, तो इसमें भयंकर परिणाम उपस्थित होगा। बाहर निकले बाद अगर उसे किसी राजपुरुष ने देख लिया तो उसके साथ ही हम सबको महान संकट में पड़ना होगा। तथापि तेरा विशेष आग्रह है, तो मैं कुछ ऐसा उपाय करूंगा कि जिससे तेरे घर से वह स्वयं ही चली जाय। इस कार्य के लिये मुझे आज राज को एकान्त में उसके साथ मिलाना। यह सुनकर मगधा बड़ी खुश हुई। और भाव-भक्ति पूर्वक मुझे भोजन कराकर रात में उसने कनकवती से मेरी भेंट कराई मुझे पुरुष रूप में देखकर उसका हृदय कामवासना से परिपूर्ण है गया। वह बारम्बार मेरे सामने कटाक्ष करती हुई, निर्लज्जता से मुझ से विषय प्रार्थना करने लगी। मैंने उससे कहा-भद्रे! मेरा एक अतिप्रिय मित्र है, वह रूप में साक्षात् कामदेव जैसा है, और उसे तुम्हारे जैसी स्त्री की चाहना भी है। किसी कार्य के लिये वह आज गांव गया हुआ है। उसने मेरे साथ संकेत किया है कि आगामी

रात्रि को गोलानदी के किनारे पर भट्टारिका देवी के मंदिर में मिलूंगा। इसलिये अगर तुम्हारी मर्जी हो तो तुम वहां पर आना, वहां तुम दोनों का अच्छा संयोग मिल जायेगा। कदाचित दिये हुये संकेतानुसार वह वहां पर न भी आया तो फिर हम तुम दोनों तो हैं ही।

कनकवती ने मुझ से पूछा आप कौन हैं? और यहां किसलिए आये हैं? मैंने कहा हम क्षत्रियपुत्र हैं और देशान्तर जाने के लिये घर से निकले हैं। रास्ते में इस शहर को देखने के लिये मैं यहां ठहर गया हूं। मेरा कथन सत्य समझ कर मेरे मित्र से मिलने के लिये उसने उत्सुकता बतलाई। अपने किये हुये कर्म का वर्णन करते हुये और उस कृत्य के कारण अपने ऊपर पड़े हुए संकट सम्बन्धी वार्तालाप में उसने सारी रात्रि व्यतीत कर दी। सुबह होने पर मैंने उससे पूछा-सुन्दरी! तुम्हारे पास कुछ वस्त्राभूषणादि भी हैं या नहीं? मुझ पर विश्वास और प्रीति रखती हुई कनकवती ने अपनी तमाम वस्तुएं मेरे पास लाकर रख दी। तलाश करने पर मुझे उनमें हार दिखाई न दिया। अतः मैंने फिर पूछा क्या इतनी ही वस्तुयें तुम्हारे पास हैं? या और भी कुछ है? उसने कहा लक्ष्मीपुंज नामक एक हार और है, वह मैंने गुप्त रीति से एक जगह जमीन में दबाया हुआ है। वह स्थान पूछने पर वह बोली-यहाँ से कुछ दूरी पर एक शून्य खण्डहर घर है, उसके पास एक कीर्तिस्तंभ है, उसकी दीवार में मैंने उस हार को छिपा के रक्खा है। वहाँ पर मैं दिन में तो जा ही नहीं सकती, रात में भी राजपुरुषों के भय से बड़ी कठिनता से वहाँ जाया जा सकता है। यदि मेरी बतलाई हुई निशानी के अनुसार वहाँ जाकर आप उस हार को ला सकते हैं तो ले आइये, फिर हम दोनों ही यहाँ से चले जायेंगे अगर आप नहीं लासकें तो आज ही संध्या समय मैं वहाँ जाकर उस हार को ले आऊंगी। इस प्रकार वार्तालाप कर मैं उसके पास से उठकर कमरे से बाहर आ गई।

मुझ से मगधा ने पूछा – सत्पुरुष! मेरे घर से बाहर निकालने का उसके लिये कोई उपाय किया? मैंने उत्तर दिया – भद्रे! तेरी प्रार्थना से मैंने ऐसा उपाय कर दिया है अगर तू उसे जाने से रोकेगी भी तथापि अब

वह तेरे घर में न रहेगी। हर्षित हो मगधा वेश्या ने मेरे लिये भोजन तैयार किया। इधर कनकवती की बतलाई हुई निशानी के अनुसार मैंने दिन में वहां जाकर बहुत ही तलाश की परन्तु मुझे हार का पता न लगा, इसलिये वापिस मगधा के घर आकर मैंने कनकवती से कहा कि मुझे ढूँढने पर भी वहां हार नहीं मिला। अतः रात को हार लेकर तुम गोला नदी के किनारे पर भट्टारिका देवी के मंदिर में मुझ से आ मिलो। यों कहकर मगधा से विदा हो मैं वहां से अपने सांकेतिक स्थान की तरफ चल पड़ी। परन्तु मैं रास्ते में यहां आने का मार्ग भूल जाने के कारण उन्मार्ग से चलकर पुण्ययोग से उस बड़ के नीचे आप से आ मिली।

अब मलयासुन्दरी ने अपनी धायमाता की तरफ नजर कर इसके आगे का वृत्तान्त कहना प्रारम्भ किया। क्योंकि महाबल तो उस वृत्तान्त को जानता ही था।

माँ भगवती! मैंने अपने स्वामी से आकर तुरन्त ही यह बात कही कि आप को अपना पति बनाने के लिये कनकवती लक्ष्मीपुंज हार लेकर अभी आनेवाली है। मेरे स्वामी ने उत्तर दिया, प्रिये! यह तुम क्या बात कहती हो? ऐसी नीच औरत के साथ बात करना भी मेरे लिये उचित नहीं तब फिर उसे पत्नी बनाने की तो बात ही क्या? यों कहकर कनकवती को दूर से आती देख ये वहां से उठकर मंदिर के दूसरी तरफ छिपकर खड़े हो गए। कनकवती आ पहुंची, मैंने उसे प्रेम से बुलाया और कहा – भद्रे! इस समय मौन रहकर खड़ी रह क्योंकि यहां पर चोर फिर रहे हैं। तेरे पास जो कुछ वस्तु हो वह मुझे सौंप दे। जिसको मैं हिफाजत से सुरक्षित रखूँ। उसे मुझ पर विश्वास तो था ही अतः अपने पास का सब कुछ मुझे दे दिया। मैंने उस पोटली को देखकर उसमें से लक्ष्मी पुंज हार और एक कंचुक निकाल लिया। शेष तमाम चीजें उस चोर के पड़े हुए खाली सन्दूक में डाल दीं। मैंने फिर धीरे से कनकवती से कहा– भद्रे! जब तक यहां पर चोरों का संचार मालूम होता है तब तक तुम इस सन्दूक में बैठ जाओ। क्रूर हृदया परन्तु कायर स्वभाव वाली कनकवती मेरी बात मंजूर कर उस सन्दूक में बैठ गई। उसके अन्दर बैठते ही मैंने

सन्दूक को बन्द कर उसमें ताला लगा दिया। इसके बाद मैंने अपने स्वामी को बुलाया, हम दोनों ने उस संदूक को उठाकर नजदीक में बहने वाली गोला नदी में बहा दिया। फिर मेरे मस्तक पर किया हुआ जो तिलक था वह मेरे स्वामी ने अपने थूक से मिटा दिया, इससे तत्काल ही मेरा स्वाभाविक स्वरूप बन गया। अपने स्वामी की आज्ञा पाकर मैंने अपने शरीर पर चंदनादि से विलेपन कर उस बड़ वृक्ष की खोकल में मिले हुए कुंडल वगैरह आभूषणों को धारण किया। कनकवती के पास से प्राप्त किया हुआ लक्ष्मी पुंज हार और कंचुक पहन कर तथा हाथ में वरमाला ले, मैं उस काष्ठस्तंभ के दल में खड़ी हो गई। मुझे इन्होंने समझा दिया था कि तू धीरज रखना यह तमाम काम इसी तरह किया जायगा। जब मैं स्वयंवरमंडप में बीणा बजाऊंगा तब तू फालियों के बीच लगाई हुई इस कीली को जोर से खींच लेना इत्यादि शिक्षा देकर, अधिक समय तक ठंडक रहे ऐसी वस्तु मेरे पास रखके और अन्दर पवन आने जाने के लिये स्तंभ के ऊपरी हिस्से में दो बारीक से सुराख बना उस फाली के साथ उन्होंने दूसरी फाली जोड़ दी। फिर मैंने अन्दर की कीलिका लगा ली। इसके बाद क्या हुआ मुझे मालूम नहीं।

महाबल– प्रिये! इसके बाद उस स्तंभ को मैंने ऐसे सुन्दर रंग-बिरंगे चित्रों से चित्रित किया कि जिससे उसके बीच की सन्धियां बिलकुल मालूम न पड़े। उसी समय मंदिर के पीछे उस सन्दूक को रखकर शहर में गए हुए चोर चोरी का माल लेकर वापिस आये। परन्तु वहां पर उस रक्षक चोर सहित संदूक न मिलने पर वे उसकी खोज में चारों तरफ घूमने लगे। मैंने उन्हें चोरों के संकेतानुसार बुलाया, वे मेरे पास आकर विश्वस्त मनुष्य के समान बोले कि यहां पर संदूक सहित एक मनुष्य था वह कहां गया? मैंने उन्हें पान देते हुए कहा- तुम इस स्तंभ को उठाकर पूर्व दिशा वाले शहर के दरवाजे के पास ले चलो तो मैं तुम्हें उस मनुष्य का पता बताऊंगा। उन्होंने मेरी बात मंजूर कर और लाया हुआ चोरी का माल नदी के किनारे रख उस स्तंभ को उठाया। मेरे कथनानुसार शहर के पूर्व दरवाजे के पास लाकर स्तंभ को खड़ा कर

दिया। अब फिर उन्होंने उस चोर के विषय में पूछा। मैंने सोचा– उस बेचारे को मंदिर के शिखर में बतला दिया तो ये उसे जान से मार डालेंगे। यह समझकर मैंने उन्हें असत्य उत्तर दिया भाई वह चोर तो संदूक का ताला तोड़कर उसमें से सब माल निकाल एक पोटली में बांधकर संन्दूक को नदी में बहा और स्वंय उस पर बैठकर तैरता हुआ नीचे की तरफ चला गया है। चोर बोले– आपका कथन सत्य ही मालूम होता है क्यों कि वह रात भर संदूक पर बैठ कर नदी मार्ग से गमन करेगा और प्रातःकाल होते ही उस धन की पुटलिया को लेकर कहीं पर चला जायगा। उनमें से एक बोला–भले वह कहीं भी जाय फिर भी तो कभी मिलेगा न? यों बोलते हुए वे चोर मेरे पास से वापिस चले गये। मैंने सावधान रह रात भर उस स्तंभ की रक्षा की। जब प्रातःकाल होने पर स्तंभ की खोज में उस तरफ आते हुए राजपुरुषों को देखा तब मैं निश्चिंत होकर गुप्त रीति से चल कर शहर में राजा से आ मिला। इसके बाद का वृत्तान्त तुम्हें वेगबती सुनायेगी, क्योंकि वह सर्वजन-प्रसिद्ध है। प्रिये! मुझे अब उस चोर की बात याद आई, अगर उसे मंदिर के शिखर में से बाहर न निकाला जाय तो फिर हमारे गए बाद उसकी क्या दशा होगी? वह विचारा अन्दर ही मर जायगा और उसका दोष मुझे ही लगेगा, इसलिए तुम यहां रहो मैं उस चोर को बाहर निकाल कर तुरन्त ही वापिस आता हूँ।

मलया – प्राण नाथ! आप मुझे ऐसी आज्ञा न करें। मैं अब आप से जुदी न रहूंगी। अब आप पहले के जैसे किसी तरह का बहाना निकाल कर मुझे छोड़ कर नहीं जा सकते। अब तो मेरे माता पिता ने ही आपको मेरा जीवन समर्पण कर दिया है। माता वेगवती! यदि हमारे आने से पहले यहां पर पिताजी आ जायं तो तुम उन्हें कह देना कि मलया सुन्दरी ने गोला नदी के किनारे पर स्थित देवी की मानता मानी थी, इस लिए वे दोनों वहां पर नमस्कार करने गए हैं और अभी वापिस आ जायेंगे। वेगवती को इस प्रकार कह कर मलया सुन्दरी महाबल के निषेध करने पर भी उसके साथ चल पड़ी।

इधर बीरधबल राजा ने उन राजकुमारों के पास जाकर उन्हें खूब समझाया, परन्तु उन्होंने एक न सुनी, उलटा रोष में आकर वे महाराज बीरधबल को डराने लगे कि प्रातःकाल होने पर हम तुम्हारे जमाई को मार कर, कन्या को लेकर जायेंगे। परन्तु खाली हाथ हम यहां से बिलकुल न जायेगे। अब महाराज बीरधबल ने उनको समझाना बुझाना छोड़ महल में आकर महाबल के लिए तुरन्त ही एक शीघ्र गामिनी सांढ़नी तैयार कराई। अब जल्दी तैयार कराने के लिए राजा मलया सुन्दरी के महल में आया; परन्तु वहां आकर, उसने महाबल और मलया सुन्दरी को न पाया। वेगवती ने कहा – वे गोला के किनारे देवी का दर्शन करने गये हैं अभी वापिस आ जायेंगे। राजा के देखते-देखते रात्रि का दूसरा प्रहर बीता, तीसरा प्रहर बीता और अन्त में प्रातःकाल होने आया परन्तु उन दोनों में से एक भी वापिस न आया। राजा आकुल व्याकुल हो उठा; गोला नदी, भट्टारिका देवी का मन्दिर इत्यादि सब जगह तलाश करने पर भी उनके कहीं पदचिन्ह तक भी नहीं मिले। प्रातःकाल में महाबल और मलया सुन्दरी के गुम होने का समाचार सुन कर वे तमाम राजकुमार निराश हो कर अपने - अपने देश को चले गये।

दुःखी वीरधवल और व्यन्तरों का वार्त्तालाप

पुत्री और जमाई का पता न लगने से महाराज बीरधबल के दुःख का पार न रहा। उन्होंने घुड़सवार और पैदल सिपाही उस दम्पती की खोज में चारों तरफ दौड़ाये, किन्तु दुर्दैव वश वे फिर फिराकर जैसे गए थे वैसे ही वापिस आ गये। इस से राजा बीरधबल को तमाम संसार सूना मालूम होने लगा। कल ही उनके दुःख का अंत आया था आज फिर उन पर यह नया दुःख आ पड़ा। वे पुत्री और जमाई के वियोग के दुःख से दुःखित होकर मुर्छित से हो गए।

इस दुःख को दूर करने में मंत्री सामन्तों की भी बुद्धि कुछ काम न करती थी। कुमारी की धाय-माता वेगवती ने हाथ जोड़ विनय पूर्वक राजा को धीरज देते हुए कहा– महाराज! आप धीरज धारण करें, कुविकल्प करने से काम न चलेगा कदाचित् वे किसी प्रयोग से पृथ्वीस्थानपुर

चले गये हो क्योंकि उन्हें वहां पहुँचने की बहुत ही जल्दी और उत्सुकता मालुम होती थी। इसलिये किसी आदमी को पृथ्वीस्थानपुर भेज कर यह तमाम समाचार महाराज सूरपाल को जनाना चाहिए। यदि वहां पर वे न भी पहुँचे होंगे तो पुत्र बात्सल्य से दुःखित हो वे भी आपके समान सर्वत्र खोज करावेंगे।

यह बात सुन राजा बीरधबल धैर्य धारण कर वेगवती की बुद्धि की प्रशंसा करने लगा। उसने देश देशान्तरों में उनकी खोज करने के लिये राजपुरुष भेजे और अपने मलयकेतु नामक राजकुमार को पृथ्वीस्थानपुर में महाराज सूरपाल के पास भेजा।

इधर महाबल और मलया सुन्दरी का क्या हुआ? यह भी देख लीजिये। एक तरफ तो कृष्ण चतुर्दशी की रात, दूसरी तरफ भयानक श्मशानभूमि, पास में बहती हुई गोला नदी के प्रवाह का कल कल नाद, अपरिचित मार्ग, चोरों का उपद्रव, प्रतिस्पर्धा से वैरी हुये राजकुमारों का भय, गीदड़, उल्लू, वगैरह निशाचर जानवरों के घोर शब्द, इत्यादि कारणों से नदी तरफ का मार्ग भयंकर मालूम होता था।

महाबल – प्रिये! ऐसी भयानक श्मशानभूमि और अन्धेरी रात में स्त्री सहित फिरना यह मेरे लिये लाभदायक नहीं है। इसलिये मेरी इच्छा है कि गुटिका के प्रयोग से तुम्हारा पुरुष रूप बना कर निर्भयता से फिरें।

मलया – स्वामिन्! आपकी इच्छा में ही मेरी इच्छा है। महाबल ने तुरन्त ही आमरस में गुटिका घिस कर मलया सुन्दरी के मस्तक पर तिलक कर दिया। गुटिका के प्रभाव से पहले के जैसे ही उसका पुरुष रूप बन गया।

अब दोनों ने देवी के मन्दिर में जाकर मन्दिर के शिखर में छिपे हुये चोर को बाहर निकाला, और उसे कह दिया कि कल तेरे साथी तेरी तलाश कर वापिस चले गये। अब जहां तेरी इच्छा हो वहां जा सकता है। चोर बोला– आपने मुझे जीवन और द्रव्य लाभ प्राप्ति में सहायता की है, आपका मैं यह उपकार कदापि न भूलूंगा। यों कह और नमस्कार कर वह चोर वहां से अन्यत्र चला गया। देवी के मन्दिर से वापिस शहर की तरफ आते हुये जब वे समीपवर्ती वटवृक्ष के नीचे आये तब उन्हें उस बड़ पर कुछ आवाज सी सुनाई दी।

महाबल बोला – प्रिये! रात्रि के इस भयानक समय में इस वटबृक्ष पर कोई व्यन्तर देव वार्तालाप करते हुये मालुम होते हैं। हम भी जरासी देर ठहर कर ध्यान पूर्वक सुनें कि ये आपस में क्या वार्तालाप करते हैं। परन्तु व्यंतरों में से कोई तुम्हारे गले का लक्ष्मीपुंज हार न उड़ाले इस लिये यह हार तुम मुझे दे दो। लक्ष्मीपुंज हार लेकर महाबल ने अपनी कमर में बांध लिया। फिर गुप्त रीति से उस बड़ की खोखल में खड़े होकर वे दोनों जनें बड़ी सावधानी के साथ व्यन्तर देवों का वार्तालाप सुनने लगे।

एक व्यन्तर ने प्रश्न किया – क्यों भाई! किसी ने पृथ्वी पर आज कोई नयी घटना देखी या सुनी है?

दूसरा व्यन्तर – एक जगह एक घटना बनने की तैयारी है परन्तु वह घटना कल बनेगी और उसका स्थान भी यहां से कुछ दूर है।

तीसरा – कहो तो सही कहां पर क्या घटना बनेगी?

दूसरा – आप सावधान होकर सुनें, पृथ्वीस्थानपुर के नरेश शूरपाल राजा के एक महाबल नामक कुमार है। उसकी माता रानी पद्मावती का हार किसी ने हरण कर लिया है, उसके लिये अपनी माता के समक्ष महाबल ने ऐसी प्रतिज्ञा की है कि यदि पाँच दिन के अन्दर में उस हार को ढूंढ कर तुम्हें न लादूं तो अग्नि में प्रवेश कर मर जाऊंगा। इसी तरह की प्रतिज्ञा उसकी माता ने भी की है कि यदि पांचवें दिन हार न मिले तो मैं भी जीवित न रहूंगी। हार की खोज में गये हुये कुमार का अभी तक कोई पता नहीं लगा, और वह प्रतिज्ञा वाला पांचवां दिन कल सुबह ही होगा। अपने कुमार और हार की खोज न मिलने से मरने के लिये उत्सुक हुई रानी को देख कर ही मैं अब यहां आया हूँ न जाने वह रानी किस तरह से प्राण दे देगी। यह भी संभव है कि रानी की मृत्यु से राजा भी जीवित न रहे।

व्यन्तर देवों के उपरोक्त वचन सुन राजकुमार महाबल कुतुहल छोड़ चिंता में मग्न हो गया। वह सोचता है कि देवताओं का वचन असत्य नहीं होता। सचमुच ही इसकी कथन की हुई घटना का होना संभवित

है। मैं कैसा मूढ़ हूँ प्रतिज्ञा भ्रष्ट होकर, यहां पर अभी तक विलास कर रहा हूं, और वहाँ पर मेरे दुःखार्त कुटुम्ब का क्षय उपस्थित हो रहा है! इतने हीं में फिर एक व्यन्तर की आवाज सुनाई दी। वह बोला – चलो, इस वक्त वहां चल कर हमें कौतुक देखना चाहिये। दूसरा व्यन्तर–हां, यह तो ठीक है। इस घटना को अवश्य देखनी चाहिये। सब की सम्मति होने पर सब ने मिल कर हुँकार शब्द बोला और हुँकार के साथ ही वह वटवृक्ष, कुमार तथा मलया सुन्दरी सहित आकाश मार्ग से उड़ चला।

यह हम प्रथम ही लिख चुके हैं कि महाबल और मलया सुन्दरी उस वटबृक्ष की ही खोक़ल में चुपचाप खड़े हो कर व्यन्तरों का वार्तालाप सुन रहे थे। हवाई जहाज के समान अति वेग से आकाश मार्ग द्वारा उड़ता हुआ वह वटबृक्ष थोड़े ही समय में एक छोटे से पहाड़ की मेखला पर आकर स्थिर हुआ। वटबृक्ष नीचे उतर गया वे तमाम व्यन्तर गोला नदी के किनारे पर रहे हुये धनंजय नामक यक्ष के मंदिर की तरफ चले गये। महाबल ने भी इस प्रदेश को पहचान लिया।

क्रमशः

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Calcutta-700 001
Ph: (O) 220-8105/2139,Resi; 329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Calcutta-700 020
Ph: 247-6874,Resi: 244-3810

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
7, Camac Street, Calcutta - 700 017
Ph: 282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Calcutta -700 007
Ph: 238-7015, 232-4087/4978

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box: 16127, Cal-17
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax: (033) 240 0098, 2471833

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
13/4 Karaya Road, Calcutta - 700 019
Ph: (O) 2208967, (R) 2471750

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Calcutta - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Ph: (O) 235 0623, (R) 218-6823

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Calcutta - 700 054
Ph: 352-8940/334-4140 (R) 352-8387/9885

SUDERA ENTERPRISES PVT. LTD.
1, Shakespeare Sarani, Calcutta - 700 071
Ph: 282-7615/7617/2726
Gram: Sudera

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H.M.T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Calcutta - 700 007
Phone: 239 7607

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Calcutta - 700 007
Ph: 238-8677/1647, 239-6097

ELECTRO PLASTIC PRODUCTS (P) LTD.
22, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 073
Ph: 236-3028, 237-4039

IN THE MEMORY OF LATE
JITENDRA SINGH NAHAR
Rabindra Singh Nahar
40/4A, Chakraberia South, Calcutta - 700 020
Ph: (O) 244-1309, (R) 475-7458

SURAJ MAL TATER
C/o Surajmal Chandmal
137, Bipin Behari Ganguli Street
Calcutta - 700 012
Ph: Shop -227-1857 (R) 238-0026

MUSICAL FILMS (P) LTD.
9A, Explanade East
Calcutta - 700 069

PANKAJ NAHATA
Oswal.Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments & Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Calcutta - 700 007
Ph: (O) 238-4755, (R) 238-0817

APRAJITA
Air Conditioned Market
Calcutta - 700 071
Ph: 282-4649, Resi: 247-2670

MANI DHARITAR UDYOG
Manufactureres of Flexible Ribbon,
Hookup, Main Cards, P. V. C. Insulated Wires and Cables.
JHANWAR LAL JAIN
96, Old Roshan Pura, Najaf Garh
New Delhi - 110043, Ph:(O) 5016527
(R) 545 3415, 542 3304
Mobile: 9811075330,

ASHOKE KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Calcutta
Ph: 237 4132/236 2072

B. W. M. INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178,25778,25779
Fax: 05414-25378 (U. P.) 0151-61256 (Bikaner)

C. H. SPINNING & WEAVING MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk, Gangasahar, Bikaner

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue
Calcutta, Ph: 464-1186

BALURGHAT TRANSPORT LTD.
170/2/C, Acharya Jagadish Bose Road
Calcutta, Ph: 284-0612-15
2, Ram Lochan Mallick Street
Calcutta - 700 073

SURANA MOTORS PVT. LTD.
24A, Shakespeare Sarani
84 Parijat, 8th Floor, Calcutta - 700 071
Ph: 2477450/5264

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Calcutta - 700 007
Ph: Gaddy-233-1766/238-8846
Mobile: 98 3102 8566
Resi: 355-9641/7196

M/S. METROPOLITION BOOK COMPANY
93, Park Street, Calcutta - 700 016
Ph: 226-2418, Resi: 464-2783

APRAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 665-3666/2272
Email : Suravee @cal2. vsnl. net in
sona @ cal3. vsnl. net in

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2209755
Resi: 464-3235/1541, Fax: (033) 4640547

GRAPHITE INDIA LIMITED
Pioneers in Carbon/Graphite Industry
31, Chowranghee Road, Calcutta - 700016
Ph: 2264943, 292194, Fax: (033) 2457390

GRAPHIC PRINT & PACK
13A, Dacars Lane (Ground Floor) Calcutta - 69
Ph: 248-1533,248-0046

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Calcutta - 700 071
Ph: 282-8181

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane
Calcutta - 700 026
Ph: 476-1533

MOTILAL BENGANI CHARITABLE TRUST
12 India Exchange Place
Calcutta - 700 001, Ph: 220-9255

Dr. ANJULA BINAYIKA
M. D. DND, M. R. C. O. G. (London)
12, Prannath Pandit Street
Calcutta - 700 025, Ph: 474-8008

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Calcutta - 700068
Ph: 4720610

विशुद्ध केशर तथा मैसूर की सुगन्धित चन्दन की लकड़ी,
वरक एवं धूप के लिये पधारें
SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Calcutta - 700 007, Ph: 239-1408

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203/1, M. G. Road, Calcutta - 700 007
Ph: (O) 238-9356/0950
(Fact). 557-1697/7059

BALCHAND SOHANLAL
5, Karbala Mohammed Street
Calcutta - 700 001, Ph: 2353902/2759
Fax: 033-2353902

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazaar Street, Calcutta - 700 001
Ph: 248-5146/6941, Mobile: 9830032021
Fax: 91(33)2420588

BHANWARLAL KARNAWAT
BEEKY TAI FEB UDYOG PVT. LTD.
City Centre, Room No. 534 & 535, 5th Floor
16, Synagauge Street, Calcutta - 700 001
Ph: 238-7281, 230-1739

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Calcutta - 700 001
Ph: (O) 348 8576/0669/1242
Resi: 225 5514, 237 8208, 229 1783

GYANI RAM HARAK CHAND SARAOGI
CHARITABLE TRUST
P-8 Kalakar Street, Calcutta - 700 007
Ph: 239 6205/9727

SATKAR CONSTRUCTION PVT. LTD.
Gujrat Mansion, 5th Floor
14, Bentick Street, Calcutta - 700 001
Ph: 248-4730/6256/9867, Direct: 248-6477/6169
Resi: 478-0765/458-3397, Mobile: 98300-30618
Fax: 248-6169

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Calcutta - 700 001
Ph: 2352076, 2355701

DELUXE TRADING CORPORATION
Distinctive Printers
36, Indian Mirror Street
Calcutta - 700 013
Ph: 244-4436

R. K. KOTHARI
N. I. Corporation
Photographic, Heavy & Fine Chemicals
44c, Indian Mirror Street, Calcutta-700 013
Phone: 245-5763/64/65
D: 245-5766, Fax: 91-33-2446148

जो हिंसात्मक प्रवृति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

A. K. CHHAJER
Chhajer & Company
Chartered Accountants
230 A Masjid Moth
South Extension Part-II
New Delhi-110049

लाड़ा देवी ग्रन्थमाला
१२ सी, लार्ड सिन्हा रोड़
कलकत्ता - ७०० ०७१

उद्देश्य

अप्रकाशित, प्राचीन, दुर्लभ, ज्ञानवर्धक एवं जनोपयोगी साहित्य प्रकाशन संवर्धन एवं संयोजन

ग्रन्थमाला से प्रकाशित पुस्तकें

श्रवण बेलगोल इतिहास के परिपेक्ष्य में
निर्माल्य ग्रहण पाप है
तीर्थ मान चित्र
भक्तामर स्तोत्र
जैन प्रश्नोत्तर माला
जैन पूजा पाठ चौबीसी पूजा संग्रह
अक्षय विधि व्रत कथा एवं पूजा
(सुहाग दशमी पूजा)
सरल जैन विवाह विधि
भव पार चलोगे
भक्तामर स्तोत्र पूजा सहित
दीपावली पूजन
तमिलनाडू के जैन तीर्थ
दिव्य ज्योति
जैन व्रत विधि एवं कथा
तत्वार्थ सूत्र
मुझे सुखी होना है
(चिन्तन के कुछ क्षण)
पंच स्त्रोत
समाधि तंत्र

श्री राजकुमार अभिषेक कुमार सेठी
कलकत्ता

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of puming stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in places where Columbus would have feared to tread)

Subhash Projects and Marketing Limited

MAN IN PARTNERSHIP WITHNATURE

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Calcutta 700016 Ph:(033)245 7562. Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi 110 020 Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011)684 6003. Regional Office:8/2 Lisoor Road, Bangalore 560 042, Ph: (080)559 5508-15, Fax: (080) 559 5580.

Laying pipelines across one of the nation s driest regions, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreshwar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of paradip

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you *recommend he visit us for a lesson in reality.*

BOTHRA SHIPPING SERVICES

2, CLIVE GHAT STREET,
(N. C. DUTTA SARANI)
2ND FLOOR, ROOM NO. 10,
CALCUTTA - 700 001
Fax No. 220-6400
Phone: 220-7162
Email : sccbss @ cal2. vsnl. net in

**Steamer Agents, Handling Agents,
Commission Agents & Transport Contractors**

शास्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
सारांश कि अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Calcutta - 700 071

Gram "GANGJUTMIL"
Fax: + 91-33-245-7591
Telex: 021-2101 GANG IN

Phone: 226-0881
226-0883
226-6283
226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 6346441/6446442
Fax: 6346287

भागवत पुराण के अनुसार
ऋषभदेव जैन धर्म के संस्थापक हैं।

Shri Radha Krishnan

HINDUSTAN GAS & INDUSTRIES LTD.
ESSEL MINING & INDUSTRIES LTD.

Registered Office

"Industry House"
10, Camac Street, Calcutta, 700 017
Telegram: 'Hindogen' Calcutta
Phone: (033) 242-8399/8330/5443

Manufacturers of

Engineers' Steel Files & Carbon Dioxide Gas
At Tangra (Calcutta)
Iron Ore and Manganese Ore Mines
In Orissa

S.G. Malleable & Heavy Duty Iron Castings
At Halol (Gujrat)
Ferro Vanadium and Ferro Molybdenum
At Vapi (Gujrat)
High Purity Nitrogen Gas
At Mangalore
H.D.P.E./P.P. Woven Sacks
At Jagdishpur (U.P.

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का है।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanksrit College, Calcutta

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.
(Formerly: Laxman Singh Jariwala)
Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayaputi, Phase-1, New Delhi-110064
Phone: 5144496,5131086,5132203
Fax: 91-011-5131184

E-mail: Laxman. jariwala @ gems. vsnl. net. in

"ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।"

KUSUM CHANACHUR

Founder: Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.
Anusandhan, Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia.

Manufactured By
M/s. K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Pin-742122
Dist: Murshidabad
Phone: Code: 03483 No. : 53232
Cal. Phone: No.: 033 2300432, 5213863

With Best Compliments.....

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv level.

Current Transformer upto 66kv.

Dry type Transformer.

Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, CALCUTTA - 700 016
PHONE: 229-7346/4553/226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007

English:

1. Bhagavati-sutra-Taxt edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:
   - Vol - 1 (satakas 1-2) Price : Rs. 150.00
   - Vol - 2 (satakas 3-6) 150.00
   - Vol - 3 (satakas 7-8) 150.00
   - Vol -4 (satakas 9-11) 150.00
2. James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Calcutta; 1977. pp. x+82 with 45 plates (It is the glorification of the sacred mountain Satrunaya.} Price : Rs. 100.00
3. P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani. Price : Rs. 15.00
4. Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord, Price : Rs. 15.00
5. Lalwani and S.R. Benerjee - Weber's Sacred Literature of the Jains Price : Rs. 100.00

Hindi

6. Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumar Begani Price Rs. 40.00
7. Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti ki Kavita. translated by Shrimati Rajkumari Begani Price : Rs. 20.00
8. Ganesh Lalwani - Nilanjana translated by Shrimati Rajkumari Begani Price : Rs. 30.00
9. Ganesh Lalwani - Candana-Murti translated by Shrimati Rajkumari Begani. Price: Rs. 50.00
10. Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira Price: Rs. 60.00
11. Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Rat, Price: Rs. 45.00
12. Ganesh Lalwani Pancadasi. Price: Rs. 100.00
13. Rajkumari Begani-Yado ke Aine me. Price: Rs. 30.00

Bengali:

14. Ganesh Lalwani-Atimukta, Price: Rs. 40.00
15. Ganesh Lalwani-Sraman Samskrti Kavita. Price:Rs. 20.00
16. Puran Chand Shyamsukha- Bhagavan Mahavir O Jaina Dharma. Price.Rs. 15.00
17. Satya Ranjan Bandyopadhyay- Prasnottare Jaina-dharma Price:Rs. 20.00

मानव जीवन नश्वर हैं उसमें भी आयु तो बहुत ही परिमित है
एकमात्र मोक्ष मार्ग ही अविचल है यह जानकर
काम भोगो से निवृत हो जाना चाहिए।

*

G.C. Jain
A-40 N.D. S.E-11
New Delhi - 110049
Tel : 625-7095/0330

WB/RNP-45
Vol. XXIV No. 8 **TITTHAYARA** November 2000
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under No. 30181/77

कोहो पीइं पणासेइ, माणी विणयनासणो।
माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्वविणासणो।।

क्रोध प्रीति का नाश करता है,
मान विनय का नाश करता है,
माया मित्रता का नाश करती है,
और लोभ सभी सद्गुणों का नाश कर देता है।

श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमन्दिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
कोबा (गांधीनगर) पि 382009

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225